रमज़ान की फज़ीलत

بِسۡـــــــمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

- रोज़ा बातीनी इबादत है क्यूँकि हमारे बताये बग़ैर किसी को यह नहीं मालूम हो सकता के हमारा रोज़ा है और अल्लाह ﷻ बातीनी इबादत को ज़्यादा पसंद फ़रमाता है। एक हदीस के मुताबिक़ "रोज़ा इबादत का दरवाज़ा है"। (जामेउस सग़ीर 146)
- इस माहे मुबारक की एक ख़ुसूसियत यह भी है के अल्लाह ﷻ ने इसमें क़ुरआन पाक नाज़िल फ़रमाया चुनांचे क़ुरआन में है : شَهۡرُ رَمَضَانَ الَّذِیۡۤ اُنۡزِلَ فِیۡهِ الۡقُرۡاٰنُ هُدًی لِّلنَّاسِ وَبَیِّنٰتٍ مِّنَ الۡهُدٰی وَالۡفُرۡقَانِ فَمَنۡ شَهِدَ مِنۡکُمُ الشَّهۡرَ فَلۡیَصُمۡهُ وَمَنۡ کَانَ مَرِیۡضًا اَوۡ عَلٰی سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنۡ اَیَّامٍ اُخَرَ یُرِیۡدُ اللّٰهُ بِکُمُ الۡیُسۡرَ وَلَا یُرِیۡدُ بِکُمُ الۡعُسۡرَ وَلِتُکۡمِلُوا الۡعِدَّةَ وَلِتُکَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰی مَا هَدٰىکُمۡ وَلَعَلَّکُمۡ تَشۡکُرُوۡنَ

तर्जुमा : *रमज़ान का महीना, जिसमें क़ुरआन उतरा , लोगों के लिये हिदायत और रहनुमाई और फ़ैसले की रौशन बातें , तो तुम में जो कोई यह महीना पाये ज़रूर उसके रोज़े रखे और जो बीमार या सफ़र में हो तो उतने रोज़े और दिन में। अल्लाह तुम पर आसानी चाहता है और तुम पर दुशवारी नहीं चाहता और इस लिये के तुम गिनती पूरी करो और अल्लाह की बड़ाई बोलो इसपर के उसने तुम्हें हिदायत की और कहीं तुम हक़ गुज़ार हो।* (पारा 2 बक़रा 185)

- हज़रते अबू सईद ख़ुदरी رضي الله عنه से रिवायत है के , रहमते आलम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : जब माहे रमज़ान की पहली रात आती है तो आसमानों और जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और आख़िरी रात तक बंद नहीं होते। जो कोई इस माहे मुबारक की किसी भी रात में नमाज़ पढ़ता है तो अल्लाह ﷻ उस के हर सजदे के बदले उसके लिये पंद्रह सौ नेकियां लिखता है और उसके लिये जन्नत में सुर्ख़ याक़ूत का घर बनाता है। जिस में साठ हज़ार दरवाज़े होंगे। और हर दरवाज़े के पट सोने के होंगे जिन में याक़ूते सुर्ख़ जड़े होंगे । पस जो कोई माहे रमज़ान का पहला रोज़ा रखता है तो अल्लाह ﷻ महीने के आख़री दिन तक के उसके गुनाह मुआफ़ फ़रमा देता है , और उसके लिये सुबह से शाम तक सत्तर हज़ार फरिश्ते दुआए मग़फिरत करते रहते हैं। रात और दिन जब भी वह सजदा करता है उस के हर सजदे के बदले उसे (जन्नत में) एक एक ऐसा दरख़्त अता किया जाता है के उसके साये में घुड़ सवार पाँच सौ बरस तक चलता रहे।

(शोएबुल ईमान प.314)

- हज़रते जाबिर इब्ने अब्दुल्लाह رضي الله عنه से रिवायत है के सुलताने कौनो मकाँ ﷺ ने फ़रमाया "मेरी उम्मत को माहे रमज़ान में पाँच चीजें ऐसी अता की गयी हैं जो मुझसे पहले किसी नबी को न मिलीं। (1) जब रमज़ान की पहली रात आती है तो अल्लाह ﷻ उनकी तरफ़ रहमत की नज़र फ़रमाता है और जिसकी तरफ़ अल्लाह ﷻ नज़रें रहमत फ़रमाये.उसे कभी अज़ाब न देगा। (2) शाम के वक़्त उनके मूँह की बू (जो भूक की वजह से होती है) अल्लाह ﷻ के नज़दीक मुश्क की खुशबू से भी बहतर है (3) फ़रिश्ते रात दिन उन के लिये मग़फीरत की दुआ करते रहते हैं। (4) अल्लाह ﷻ जन्नत को हुक्म फ़रमाता है "मेरे नेक बंदों के लिये मुज़य्यिन (यानी आरास्ता) हो जा जल्द ही वह दुनिया की मशक़्क़त से मेरे घर और करम में राहत पायेंगे (5) जब माहे रमज़ान की आख़री रात आती है तो अल्लाह ﷻ सब की मग़फिरत फ़रमादेता है। क़ौम में से एक शख़्स ने खड़े होकर अर्ज़ की , या रसूलुल्लाह ﷺ क्या यह लैलतूल क़द्र है ? इरशाद फ़रमाया "नहीं क्या तुम देखते नहीं के मज़दूर जब अपने कामों से फ़ारिग हो जाते हैं तो उन्हें उजरत (महनताना) दी जाती है। (तर्ग़ीब व तर्हीब प. 56)